भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान
ICAR-Indian Institute of Soybean Research
खंडवा रोड, इन्दौर 452001
Khandwa Road, Indore-452001

फ़ाइल् क्रमांक **F.No. :** टेक **10-6/2022** दिनांक **Date:** 05.05 2022

YouTube channel: https://www.youtube.com/channel/UCNdY5AsfPZqsCO8IxkAuSyQ
Facebook Page: https://www.facebook.com/ICAR-Indian-Institute-of-Soybean-Research-Indore-507415769433553
Twitter: @IisrIcar **Whatsapp & Telegram: IISR Soy Farmers**

सोयाबीन कृषकों के लिए उपयोगी सलाह / Weekly Advisory for Soybean Farmers
(5-11 जून 2022 / 5-11 June 2022)

1.	सोयाबीन की बोवनी के लिए जून माह के दुसरे सप्ताह से जुलाई माह के प्रथम सप्ताह का समय सबसे उचित होता. लेकिन सलाह हैं कि मानसून के आगमन के पश्चात ही, न्यूनतम 10 सेमी वर्षा होने की स्थिति में सोयाबीन की बोवनी करें. The optimum time for sowing of soybean crop is from second week of June to first week of July. However, farmers are advised to sow their soybean crop only after the arrival of monsoon while ensuring minimum 100 mm rainfall.	
2.	सोयाबीन के उत्पादन में स्थिरता की दृष्टि से 2 से 3 वर्ष में एक बार अपने खेत की गहरी जुताई करना लाभकारी होता हैं. अतः ऐसे किसान जिन्होंने इस पद्धति को नहीं अपनाया हैं, कृपया इस समय अपने खेत की गहरी जुताई करें. उसके पश्चात विपरीत दिशा में कल्टीवेटर एवं पाटा चलाकर खेत को तैयार करें. सामान्य वर्षो में विपरीत दिशा में दो बार कल्टीवेटर एवं पाटा चलाकर खेत को तैयार करें. Deep summer ploughing once in 2-3 years, is beneficial practice in order to have yield stability. Therefore those farmers who have not yet done this, are advised to carry out the same followed by two criss-cross harrowings. In normal years, field may be prepared the field using criss-cross harrowings followed by planking.	
3.	अंतिम बखरनी से पूर्व गोबर की खाद (10 टन/हे) या मुर्गी की खाद (2.5 टन/हे) को खेत में फैलाकर अच्छी तरह मिला दे. इससे भूमि की गुणवत्ता एवं पोषक तत्वों में वृद्धि होगी. Apply well decomposed FYM @ 10 t/ha or Poultry Manure @ 2.5 t/ha before the last harrowing.	
4.	उपलब्धता अनुसार अपने खेत में विपरीत दिशाओं में 10 मीटर के अंतराल पर सब-सोइलेर नमक यन्त्र को चलाये, जिससे भूमि की जलधारण क्षमता में वृद्धि होगी, एवं सूखे की अनपेक्षित स्थिति में फसल को अधिक दिन तक बचाने में सहायता मिलेगी. As per suitability, farmers are advised to run sub-soiler machine at an interval of 10 m which facilitate the breaking of hard soil pan thereby increasing the rain water infiltration.	

5.	विगत कुछ वर्षों से फसल में सुखा, अत्रिवृष्टि या असामयिक वर्षा जैसी घटनाये देखि जा रही हैं. ऐसी विपरीत स्थितियों में फसल को बचाने हेतु सलाह हैं कि सोयाबीन की बोवनी के लिए बी.बी.एफ (चौड़ी क्यारी प्रणाली) या (रिज-फरो पद्धति) कुड-मेड-प्राणाली का चयन करें तथा सम्बंधित यन्त्र या उपकरणों का प्रबंध करें. The unfavorable incidences like drought or heavy rains for prolonged period as well incessant rains have been increasingly reported in recent years. The soybean farmers are requested to use Broad Bed Furrow (BBF) or Ridge & Furrow. This will facilitate managing the crop both in case of waterlogging as well as drought situation.	
6.	सलाह है कि अपने जलवायु क्षेत्र के लिए अनुशंसित, विभिन्न समयावधि में पकनेवाली 2-3 सोयाबीन की किस्मों का चयन करें तथा बीज की उपलब्धता एवं गुणवत्ता (बीज का अंकुरण न्यूनतम 70%) सुनिश्चित करें. Farmers are also advised to select and grow 2-3 soybean varieties recommended for the area with different maturity duration and ensure the availability and germination quality (minimum 70%) of the seed.	
7.	सोयाबीन की खेती के लिए आवश्यक आदान (बीज, खाद-उर्वरक, फफूंदनाशक, कीटनाशक, खरपतवारनाशक , जैविक कल्चर आदि) का क्रय एवं उपलब्धता सुनिश्चित करें. Ensure availability of other critical inputs like fertilizers, weedicides, fungicides and cultures for seed treatment etc.	